मध्यस्थ दर्शन प्रकाशित वाङ्मय स्वरूप

*स्रोत: व्यवहारात्मक जनवाद, संस-२००२, पृ 169 से 176, /परिभाषा संहिता – ए.नागराज

"मध्यस्थ दर्शन सहास्तित्ववाद"

परिभाषा: सह अस्तित्व में मध्यस्थ सत्ता, मध्यस्थ क्रिया, मध्यस्थ बल, मध्यस्थ जीवन का अध्ययन एवं सूत्र व्याख्या।

- (तात्विक रूप में) मध्यस्थ सत्ता, मध्यस्थ क्रिया, मध्यस्थ बल, मध्यस्थ शक्ति, मध्यस्थ जीवन का सूत्र व व्याख्या। (अ) मध्यस्थ:-अस्तित्व में संपूर्ण आवेशों को सामान्य बनाने और आवेशों से निष्प्रभावित रहने का पूर्ण वैभव। (ब) दर्शन:-दर्शक दृष्टि के द्वारा स्वीकार व प्रतिबद्धता पूर्वक, दृश्य के साथ किया गया परावर्तन व प्रत्यावर्तन क्रिया।

आशय:

मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्व वाद मानव को अनुभवमूलक प्रणाली पद्धति पर ध्यान दिलाता है। अनुभवमूलक विधि से ही मानव प्रमाणित होता है तथा नित्य सत्य को बोध व प्रमाणित करता है। मानव सदैव शुभाकाँक्षा सम्पन्न है ही, नित्य शुभ के रूप में अनुभव मूलक अभिव्यक्ति सम्प्रेषण का बोध कराता है। अनुभव ही एक मात्र तृप्ति स्थली है। अनुभवमूलक परम्परा ही अनुभवमूलक अभिव्यक्ति ही गरिमा महिमा होना सुस्पष्ट हो जाता है। अनुभव सर्वतोमुखी समाधान का स्रोत होने को स्पष्ट करता है। न्याय पूर्वक मानव परम्परा में जीते हुए सर्वतोमुखी समाधान को प्रमाणित करने की विधि विधान, कार्य व्यवहार, फल, परिणाम और प्रयोजनो को लय बद्ध विधि से बोध करा देता है। अतएव लोक संवाद में इस मुद्दे पर चर्चा सम्पन्न हो सकती है कि अनुभवमूलक विधि से जागृति प्रमाणित करना है या भ्रमित रहना है। अनुभवमूलक विधि से मानव चेतना सहज प्रमाण है और भ्रम पूर्वक जीव चेतना का प्रकाशन है।

मानव व्यवहार दर्शन

परिभाषा: मानव व्यवहार दर्शन - मानवत्व सहित व्यवहार का अध्ययन, मानवीय व्यवहार सूत्र व्याख्या सहज अध्ययन, अखण्डता सार्वभौमता सहज सूत्र व्याख्या का अध्ययन।

पुस्तक आशय:

मानवीय शिक्षा में मानव व्यवहारदर्शन का अध्ययन कराना होता है जिसमें अखंड समाज, सार्वभौम व्यवस्था का बोध, इसकी आवश्कता का बोध कराया जाता है। मानव व्यवहार में प्राकृतिक नियम, बौद्धिक नियम और सामाजिक नियमों को बोध कराने की व्यवस्था रहती है। जिससे समाज की सुद्द$ढता, वैभव पूर्णता का बोध कराया जाता है। फलस्वरूप हर मानव अखंड समाज के अर्थ में अपने आचरणों को प्रस्तुत करना प्रमाणित होता है। इस प्रकार ऐसे अखंड समाज के अर्थ में सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी स्वयं स्फूर्त विधि से सम्पन्न होना होता है। यही स्वतंत्रता और स्वराज्य का प्रमाण है। अस्तु संवाद का मुद्दा है अखंड समाज सार्वभौम व्यवस्था के अर्थ में जीना चाहिये या समुदाय गत राज्य के अर्थ में जीना चाहिये।

कर्म दर्शन

परिभाषा: मानव में कायिक, वाचिक, मानसिक, कृत, कारित, अनुमोदित, जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति में किया गया कार्य व्यवहार व्यवस्था सहज भागीदारी का अध्ययन।

- मानवीयता के लक्ष्य में अर्थात् मानवीयतापूर्वक व्यवस्था और समग्र व्यवस्था में भागीदारी के रूप में मनुष्य द्वारा किया गया कायिक, वाचिक, मानसिक क्रियाकलाप ही स्वयं स्वतंत्रता, स्वराज्य कर्म, आचरण कर्म, व्यवहार कर्म, उत्पादन कर्म, विनिमय कर्म, स्वास्थ्य संयम कर्म, न्याय सुरक्षा कर्म और उसके प्रचार, प्रकाशन, प्रदर्शन, साहित्य, कला की अभिव्यक्ति संप्रेषणाएँ कर्म हैं ।
- जागृति पूर्वक कायिक, वाचिक, मानसिक, कृत, कारित, अनुमोदित विधि से सुखी होने की विधि।

पुस्तक आशय:

मानवीय शिक्षा में कर्म दर्शन का अध्ययन कराया जाता है जिसमें कायिक, वाचिक, मानसिक, कृतकारित, अनुमोदित भेदों से हर मानव को कर्म करने की सत्यता को बोध कराया जाता है। इससे मानव का विस्तार समझ में आता है। इससे स्वयं में विश्वास का आधार बनता है। मानसिक रूप में जितनी भी क्रियाएँ होती है वे सब कायिक और वाचिक मानसिक विधि से कार्यरूप में परिणित होती है। फलस्वरूप उसका फल परिणाम होता है फल परिणाम के आधार पर समाधान या भ्रमवश समस्या का होना पाया जाता है। जागृत परम्परा में किसी भी प्रकार की समस्या का कायिक या वाचिक मानसिक विधि से निराकरण स्वयं से ही निष्पन्न होना पाया जाता है। इस तरह से स्वायत्तता का प्रमाण मिलता है। स्वायत्तता अपने में सर्वतोमुखी समाधान सम्पन्नता ही है। जहाँ कहीं भी स्पष्ट रूप में देखने को मिलेगा समस्या का निराकरण स्वयं में ही हो जाने को स्वायत्तता बताई गयी है। कार्य का स्वरूप नौ प्रकार से बताया गया है। यह उत्पादन कार्य ,व्यवहार कार्य और व्यवस्था कार्य में प्रमाणित होना देखा गया है। सभी कार्य इन तीन तरीकों से ही सम्पन्न होना देखा गया है। इन सभी कार्यो का उद्देश्य एक है मानवाकांक्षा को सफल बनाना। यही मानव लक्ष्य होने के आधार पर कर्मतंत्र, व्यवहार तंत्र, समग्र व्यवस्था में भागीदारी करने का तंत्र ये तीनो तंत्र मानव लक्ष्य को प्रमाणित करना ही है। इसी का नाम कर्मदर्शन है। कर्मदर्शन का सम्पूर्ण स्वरूप अपने में मानव जितने प्रकार के कार्य करता है, उसकी सार्थकता क्या है, कैसे किया जाये। इन तीनो विधा में अध्ययन कराता है। इससे मानव जाति मार्गदर्शन पाने की अथवा व्यवस्था में जीने की प्रेरणा पाना एक देन है। अतएव कायिक, वाचिक, मानसिक क्रियाकलापो में संगीतमयता की आवश्यकता पर एक अ'छा संवाद हो सकता है। मानव की संम्पूर्ण संवेदनाएँ अर्थात शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध के रूप में पहचानी जाती है जिसे हर सामान्य व्यक्ति पहचानता है। इसके नियंत्रण के लिए सम्पूर्ण ज्ञान, दर्शन, आचरण को संजो लेने का प्रमाण प्रस्तुत करना ही अभ्युदय समाधान है। इसका मुद्दा यही है कि कायिक वाचिक मानसिक रूप में एकरूपता चाहिये या नहीं। यदि चाहिये तो मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद में पारंगत होना आवश्यक है। नहीं की स्थिति में इसकी जरूरत नहीं है।

अभ्यास दर्शन

परिभाषा: - अभ्यास से होने वाले प्रयोजन उपयोगिता व आवश्यकता सहज स्वीकृति।

- समझ सहज आवश्यकता रूप में स्वीकृति।
- समझने के उपरान्त समझाने में ध्यान देने पर स्वीकृति।

पुस्तक का आशय

मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद के अनुसार अभ्यास दर्शन सर्वमानव के लिये अध्ययन के अर्थ में प्रस्तुत है। अभ्यास दर्शन अपने में कायिक, वाचिक, मानसिक, कृत, कारित, अनुमोदित क्रियाकलापो में सार्थकता का प्रतिपादन है। ''अभ्यास दर्शन'' समझदारी के लिए अभ्यास को स्पष्ट करता है। एवं समझने के उपरान्त समझदारी को प्रमाणित करने की अभ्यास विधियो का अध्ययन कराता है। अध्ययन होने का प्रमाण अनुभव मूलक विधि से प्रमाणित होने का प्रतिपादन है। अनुभव सहअस्तित्व में होने का स्पष्ट अध्ययन करा देता है, बोध करा देता है। इससे मानव परम्परा में प्रमाणित होने का मार्ग प्रशस्त होता है। इसमें जीवनसमु?य क्कांहृग्श् का और दर्शनसमु?य क्कांहृग्श् का आशय सुस्पष्ट हो जाता है। जीवनसमु?य क्कांहृग्श् अपने में दृष्टा पद् प्रतिष्ठा सहित कर्ता-भोक्ता पद में प्रमाणित होने का बोध होता है। सम्पूर्ण अस्तित्व ही जीवन के लिए दृष्य रूप में प्रस्तुत रहता है। सम्पूर्ण दृष्य व्यवस्था के रूप में व्याख्यायित है। नियम-नियंत्रण-संतुलन ही इसका सूत्र है। नियम की व्याख्या सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व में प्रत्येक एक एक की यथास्थिति के आधार पर निश्चित आचरण ही व्याख्या है। ऐसा निश्चित आचरण ही हर इकाई का त्व है। ऐसी यथा स्थितियाँ और आचरण परिणामानुषंगी विधि से, बीजानुषंगीय विधि से एवं आशानुषंगीय रूप में स्पष्ट होता हुआ देखने को मिलता है। अभ्यास दर्शन ऐसी स्पष्टता को स्पष्ट रूप में अध्ययन करा देता है। सभी स्पष्टताएँ नियम, नियंत्रण, सन्तुलन से गुथी हुई के रूप में होना पाया जाता है। इस भौतिक रासायनिक रूपी बड़े छोटे रूप में होना पाया जाता है। होना ही अस्तित्व है। मानव भी जड़ चैतन्य प्रकृति के रूप में होना अध्ययनगम्य है। इसी आधार पर चैतन्य प्रकृति में दृष्टा पद प्रतिष्ठा होना, इसके वैभव में ही दृष्टा-कर्ता-भोक्ता पद का प्रमाण प्रस्तुत करना ही जागृति का प्रमाण है। अभ्यास दर्शन इन तथ्यो को अध्ययन कराता है। इसमें मुद्दा यही है कि हमें सम्पूर्ण अध्ययन करना है तो मध्यस्थ दर्शन ठीक है नहीं करना है तो मध्यस्थ दर्शन की जरूरत नहीं है।

अनुभव दर्शन

- सहअस्तित्व में अनुभव प्रमाण सहज सत्यापन।
    - व्यापक वस्तु में संपूर्ण एक-एक संपृक्त है यह समझ में आना प्रमाणित होना।
    - व्यापक वस्तु सहज साम्य ऊर्जा के रूप में समझ में आना प्रमाणित होने का सूत्र व व्याख्या है।

अनुभात्मक आध्यात्मवाद

परिभाषा: सहअस्तित्व में मध्यस्थ सत्ता, मध्यस्थ क्रिया, मध्यस्थ बल, मध्यस्थ शक्ति और मध्यस्थ जीवन का अध्ययन, अवधारणा और अनुभव वर्तमान।

पुस्तक का आशय:

मानवीय शिक्षा में अनुभवात्मक अध्यात्मवाद को अध्ययन कराया जाता है जिसमें अध्यात्म नाम की वस्तु को साम्य ऊर्जा के रूप में जानने, मानने, पहचानने की व्यवस्था है। सम्पूर्ण प्रकृति, दूसरी भाषा में सम्पूर्ण एक एक वस्तुएँ, तीसरी भाषा में जड़-चैतन्य प्रकृति, चौथी भाषा में भौतिक, रासायनिक और जीवन कार्यकलाप व्यापक वस्तु में सम्पृक्त विधि से नित्य क्रियाकलाप के रूप में वर्तमान है। इसे बोधगम्य कराते है यही सहअस्तित्व का मूल स्वरूप है। इस मुददे को बोध कराना बन जाता है। बोध को प्रमाणित करने के क्रम में अनुभव होना सुस्पष्ट हो जाता है। जिससे अनुभवमूलक विधि से हर नर-नारी को जीने के लिए प्रवृति उदय होती है। इस तथ्य के आधार पर संज्ञानशीलता को प्रमाणित करना संभव हो जाता है। संज्ञानशीलता अपने आप में सर्वतोमुखी समाधान होना पाया जाता है। अनुभावात्मक अध्यात्मवाद सर्वतोमुखी समाधान के स्रोत के रूप में अध्ययन विधा से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। संवाद के लिए उल्लेखनीय मुददा यही हैं अनुभवमूलक विधि से जीना हैं या नहीं, समाधानपूर्वक जीना है या नहीं।

समाधानात्मक भौतिकवाद

परिभाषा: अस्तित्व में सम, विषम, मध्यस्थ क्रिया, बल, शक्ति, रचना व विरचना का विकास क्रम में उपयोगिता, पूरकता, उदात्तीकरण के रुप में समाधान सूत्र और व्याख्या।

- श्रम नियोजन, श्रम-विनिमय प्रणाली रूपी उत्पादन- विनिमय संबंधी समाधान सूत्र व व्याख्या।

पुस्तक आशय:

शिक्षा में अथवा शिक्षा विधि में जीवन ज्ञान, सहअस्तित्व दर्शनज्ञान सम्पन्न शिक्षा रहेगी ही। इसे पाने के लिए समाधानात्मक भैतिकवाद का अध्ययन कराया जाता है। जिससे संपूर्ण भौतिकता रसायन तंत्र में व्यक्त होते हुए संयुक्त रूप में विकास क्रम को सुस्पष्ट किये जाने का तौर तरीका और पूरकता रूपी प्रयोजनो का बोध

कराया जाता है। समाधानात्मक भौतिकवाद परमाणु में विकास, परमाणु में प्रजातियां होने का अध्ययन पूरा कराता है। परमाणु विकसित होकर जीवन पद में संक्रमित होता है दूसरी भाषा में विकसित परमाणु ही जीवन है। हर भौतिक परमाणु में श्रम, गति, परिणाम का होना समझ में आता है। जबकि गठनपूर्ण परमाणु (चैतन्य इकाई) परिणाम प्रवृति से मुक्त होता है। दूसरी भाषा में जीवन परमाणु परिणाम के अमरत्व पद में होना पाया जाता है। अमरत्व की परिकल्पना प्राचीन काल से ही देवताओं को अमर, आत्मा को अमर कहना यह आदर्शवाद है। यह मन में रहते आयी है। इसे चिन्हित रूप में सार्थकता के अर्थ में अध्ययन करना कराना संभव नहीं हुआ था। सहअस्तित्व विधि से यह संभव हो गया। इस क्रम में जीवन के सम्पूर्ण क्रियाकलापो जैसे जीवन में जागृति, जागृति क्रम में जाग्रति एवं जीवन का अमस्व का अध्ययन भली प्रकार से हो पाता है। जागृति में समाधान का उदय होने पर समाधानात्मक भौतिकवाद की सार्थकता समझ में आती है। भौतिकवाद को संघर्ष का आधार माना जाये या समाधान का। इस पर संवाद एक अ'छा कार्यक्रम है।

व्यवहारात्मक जनवाद

परिभाषा: मानव अपने परस्परता में व्यवहार न्याय प्रमाणित करने के लिए चर्चा, परिचर्चा प्रमाणात्मक प्रस्तावात्मक वार्तालाप।

- अस्तित्व में प्रत्येक व्यक्ति को दृष्टापद में पहचानने, प्रत्येक व्यक्ति में समाधान, समृद्धि, अभय, सह अस्तित्व की अपरिहार्यता को पहचानने, प्रत्येक व्यक्ति को स्वराज्य और स्वतंत्रता की परमावस्था को पहचानने, प्रत्येक व्यक्ति को न्याय सुलभता, उत्पादन सुलभता, विनिमय सुलभता की अनिवार्यता को पहचानने प्रत्येक व्यक्ति को संबंधों व मूल्यों को पहचानने व निर्वाह करने की संभावना को पहचानने, प्रत्येक व्यक्ति को कर्म स्वतंत्रता, कल्पनाशीलता को पहचानने। एक व्यक्ति जो कुछ जानता है, करता है, पाता है उसे प्रत्येक व्यक्ति को जानने, करने ,पाने को पहचानने, प्रत्येक व्यक्ति में आवश्यकता से अधिक उत्पादन करने की क्षमता में समानता को पहचानने, प्रत्येक व्यक्ति अपने त्व सहित व्यवस्था है और समग्र व्यवस्था में भागीदार होने के रूप में समानता को पहचानने का सूत्र और व्याख्या।

पुस्तक आशय

मानवीय शिक्षा में व्यवहारात्मक जनवाद प्रस्तुत हुआ है। इसका प्रयोजन इंगित सभी मुद्दो में सकारात्मक पक्ष को स्वीकारना है ऐसी मान्यता हमारी है। इसी के तहत यह पूरा वांगमय अध्ययन और संवाद के लिए प्रस्तुत है।

व्यवहारवादी समाजशास्त्र

परिभाषा: समाधान सत्य न्याय संगत व्यवहार सूत्र व्याख्या।

पुस्तक आशय:

मानवीय शिक्षा क्रम में व्यवहारवादी समाजशास्त्र को अध्ययन कराया जाता हैं। जिसमें मानव मानव के साथ न्याय, समाधान, सहअस्तित्व प्रमाणपूर्वक जीने के तथ्यों को बोध कराया जाता है। जिससे सहअस्तित्व बोध, जीवन बोध सहित व्यवस्था में जीना सहज हो जाता है। इसमें संवाद का मुद्दा हैं सहअस्तित्व बोध सहित जीना हैं या केवल वस्तुओं को पहचानते हुए जीना है।

आवर्तनशील अर्थशास्त्र

परिभाषा: विधिवत किया गया अर्थोपार्जन सहज अर्थ का सदुपयोगात्मक, सुरक्षात्मक एवं विनिमियात्मक विचारों का आवर्तनशील प्रेरणा स्रोत।

पुस्तक आशय:

मानवीय शिक्षा में आवर्तनशील अर्थव्यवस्था को अध्ययन कराया जाता है। अर्थ की आर्वतनशीलता के मुद्दे पर यह बोध कराया जाता है कि श्रम ही मूलपूंजी है। प्राकृतिक ऐश्वर्य पर श्रम नियोजन पूर्वकउपयोगिता मूल्य को स्थापित किया जाता है। उपयोगिता के आधार पर वस्तु मूल्यन होना पाया जाता है। इस विधि से हर व्यक्ति अपने परिवार में कोई न कोई चीज का उत्पादन करने वाला हो जाता है। इस ढंग से उत्पादन में हर व्यक्ति भागीदारी करने वाला हो जाता है फलस्वरूप दरिद्रता व विपन्नता से और संग्रह सुविधा के चक्कर से मुक्त होकर समाधान समृद्धिपूर्वक जीने का अमृतमय स्थिति गति बन जाती है। इसमें जन संवाद का मुद्दा

यही है हम मानव परिवार में स्वायत्तता, स्वावलम्बन, समाधान, समृद्धि पूर्वक जीना है या पराधीन परवशता संग्रह सुविधा में जीना है। आवर्तनशील अर्थव्यवस्था में श्रम मूल्य का मूल्याँकन करने की सुविधा हर जागृत मानव परिवार में होने के आधार पर वस्तुओ का आदान-प्रदान श्रम मूल्य के आधार पर सम्पन्न होना सुगम हो जाता है। इससे मुद्रा राक्षस से छुटने की अथवा मुक्ति पाने की विधि प्रमाणित हो जाती है। जिसमें शोषण मुक्ति निहित रहती है। अतएव संवाद का मुद्दा यही है कि लाभोन्मादी विधि से अर्थतंत्र को प्रतीक के आधार पर निर्वाह करना है या श्रम मूल्य के आधार पर वस्तुओ के आदान-प्रदान से समृद्ध रहना है।

मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान

परिभाषा: - मानव विकसित चेतना के अर्थ में किया गया मानसिक प्रक्रिया को सत्य में भास, आभास, प्रतीति और अनुभूति क्रम में पहचानना। यह बौद्धिक विज्ञान अंतरंग सहज साधनों की साधना है |

- मानव मानस को मनाकार को साकार करने वाले मन: स्वस्थता के आशावादी व प्रमाणित करने वाले के रूप में पहचानना।

- मानव मानस को स्वराज्य और स्वतंत्रता के अर्थ में कल्पनाशीलता और कर्म स्वतंत्रता को पहचानना।

- प्रत्येक मानव में (परिष्कृति पूर्ण) संचेतना को जानने, मानने, पहचानने और निर्वाह करने के रूप में प्रमाणित करना।

- प्रत्येक मानव में जीवन वैभव सहज चयन व आस्वादन, तुलन और विश्लेषण, चित्रण व चिंतन, बोध व संकल्प और अनुभव एवं प्रामाणिकता के रूप में पहचानना।

- मानव मानसिकता में मानवत्व को, मानवीय दृष्टि यथा न्याय, धर्म, (समाधान) सत्य, मानवीय विषय यथा पुत्रेषणा, वित्तेषणा और लोकेषणा एवं मानवीय स्वभाव यथा धीरता, वीरता, उदारता, दया, कृपा, करूणा को व्यवस्था के रूप में पहचानना।

- मानव में निषेध को अमानवीय दृष्टि यथा प्रिय, हित, लाभ, अमानवीय विषय-आहार, निद्रा, भय, मैथुन, अमानवीय स्वभाव यथा हीनता, दीनता क्रूरता को अव्यवस्था के रूप में पहचानना।

- जीवन जागृति संपन्न मानसिकता का अध्ययन व्यवस्था के रूप में पहचानना।

पुस्तक का आशय

मानवीय शिक्षा में मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान का अध्ययन करने कराने का प्रावधान है। मानव संचेतना को मानव संवेदनशीलता और संज्ञानशीलता के रूप में माना गया है। जिसके अध्ययन से संज्ञानशीलता पूर्वक जीने की विधि बन जाती है। संज्ञानशीलता पूर्वक जीने का तात्पर्य मानव लक्ष्य को सार्थक बनाना है। परम्परा के रूप में इसकी निरन्तरता होना हैं। मानव की हैसियत को, मानसिकता को, अथवा जागृति मूलक मानसिकता को महसूस कराता है। साथ में जागृति की महिमा मानव परंपरा के लिए प्रेरणा देता है। क्योंकि मानव संज्ञानशीलता पूर्वक लक्ष्य मूलक विधि से जीना ही मानव परम्परा का वैभव है अर्थात स्वराज और स्वतंत्रता है। इस तथ्य को भली प्रकार बोध कराते है। इसमें संवाद के लिए मुद्दा यही है मानव मूल्य मूलक विधि से जीना हैं या रूचिमूलक विधि से जीना है।

मानव आचार संहिता रूपी मानवीय संविधान

मानव के लिए : प्रामाणिकता पूर्ण अनुभव बल विवेक और विज्ञान सम्मत विचार शैली। मानवीयता पूर्ण आचरण पद्धति सहित मूल्य मूलक और लक्ष्य मूलक प्रणाली समेत, तन, मन, धन रुपी अर्थ का सदुपयोग और सुरक्षात्मक नीति सम्पन्न जीने की कला के सूत्र और व्याख्या सम्मत प्रक्रिया का प्रावधान।

- निपुणता, कुशलता, पाण्डित्यपूर्ण कार्य करने, न्यायपूर्ण व्यवहार करने, प्रामाणिकता व समाधान पूर्ण वा'मय प्रणाली के रुप में प्रबुद्धता और संप्रभुता को नियंत्रित, संयत, समृद्ध करने-कराने के रूप में प्रभुसत्ता सूत्र और व्याख्या सम्मत प्रक्रिया का प्रावधान।
- मानवीय आचरण, व्यवहार, विधि, विनिमय प्रक्रिया, उत्पादन बाध्यता की सूत्र और व्याख्या रूपी संहिता।
- पूर्णता सहज प्रमाण परम्परा के अर्थ में प्रस्तुत विधान सूत्र व्याख्या।

मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद)

प्रणेता एवं लेखक: अग्रहार नागराज

सम्पूर्ण वांडमय डाउनलोड:

www.madhyasth.org | www.bit.ly/dpsroot